महिला सशक्तिकरण

चिरकाल से ही मानव समाज में नारियों का स्थान अग्रणी रहा है। चाहे वह आध्यात्मिक हो, राजनीतिक, नैतिक अथवा वैज्ञानिक क्षेत्र रहा हो। परन्तु समय के करवटों के साथ कुरीतियां बढ़ती गयी और यह केवल एक कोने में दबकर रह गयी। परन्तु आज भी इनके महानतम् कर्त्तव्यों ने आजादी से लेकर भक्ति भाव पूर्ण मिशाल कायम करने, एक सुन्दर तथा स्वस्थ परिवार, समाज का निर्माण करने में नारी का योगदान अतुलनीय है। इन सभी गुणों से युक्त नारी जगत को अधिक बढ़ावा देने के लिएं सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थायें 'महिला सशक्तिरण' अर्थात महिलाओं की स्थिति बेहतर बनाने के लिए अनेक कार्यक्रम आयोजित करते हैं। नि:संदेह आज महिलाओं को सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में कई अधिकार मिले हैं। परन्तु फिर भी स्थिति पूर्णतया नियंत्रण में नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी अशिक्षा, गरीबी, भेदभावपूर्ण व्यवहार के कारण उनका शोषण हो रहा है दहेज की समस्या आज भी पूर्ववत् है। नर और नारी परिवार रूपी रथ के दो पहिये है। परिवार को सुचारू रूप से चलाने के लिए दोनो पहियों का समान होना आवश्यक हैं। अगर रथ का एक पहिया छोटा जर्जरीभूत अथवा खण्डित होगा तो स्पष्ट है रथ कहीं न कहीं अवश्य फंसेगा।

आज संसार की आबादी का 40 प्रतिशत महिलाओं को उचित स्थान नहीं है, अर्थात एक पहिया छोटा है। उसका उचित सम्मान बराबर की भागीदारी नहीं है, स्वयं नारी में भी आध्यात्मिक शक्ति, मनोबल, नैतिक बल, आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास तथा स्वमान की जो स्थिति होनी चाहिए। वैसी देखने में नहीं आती अत: स्वयं नारी को भी स्वयं को सशक्त बनाने के प्रयास करने होंगे अपना स्वमान जागृत करना होगा आत्म निर्भर और साहसी बनकर समाज का उत्तरदायित्व निभाना होगा। आदिकाल में नारी सर्वगुण सम्पन्न थी। ज्ञान गुणएवं शक्तियों से सम्पन्न उसका वह स्वरूप आदि शक्ति के रूप में गाया और पूजा जाता है। आज भी विभिन्न धार्मिक आयोजनों में मनुष्य इन आदि शक्तियों का आह्वान करते हैं। इनके दर्शनार्थ कष्ट, साहस, तप, साधनायें करते हैं। इनमे ज्ञान की देवी सरस्वती, शक्ति की देवी दुर्गा, धन की देवी-लक्ष्मी मुख्य है। नारी जगत की महिमा अतीत से ही स्तुत्य है - **यत्र नार्यस्तु पूज्यते तत्र रमन्ते देवता।** अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते है।

वर्तमान नारी इन्हीं स्तुत्यों से सुसज्जित आदि शक्तियों की वंशज है परन्तु जो भौतिकता एवं आध्यात्मिक गुणों का समन्वय आदि नारी में था उसका आधुनिक नारी में सर्वथा अभाव है। आज की नारी ने विभिन्न क्षेत्रों में उच्च शिक्षा प्राप्त कर काफी हद तक भौतिक ऊँचाईयों को छुआ है। परन्तु दूसरे पक्ष की अवहेलना के कारण उसका यह प्रयास बहुत सकारात्मक परिणाम नहीं दे रहा है। उसके व्यक्तित्व में आध्यात्मिक वैभव का अभाव बना हुआ है। पर प्रश्न उठता है ये दिव्य गुण उसमें कहाँ से आये? वास्तव में नारी में आध्यात्मिक शक्ति का पुन: संचार करने तथा उसे खोई अस्मिता पुन: प्राप्त कराने के लिए परमात्मा शिव अवतरण धर्मग्लानि के समय आदिदेव प्रजापिता ब्रह्मा की साधारण मानवीय तन में होता है।

परमपिता परमात्मा शिव अपनी सम्पूर्ण अलौकिक शक्तियाँ नारी को प्रदान कर उसे आदि शक्ति के पद पर आसीन करते है इस प्रकार परमात्मा शिव और प्रजापिता ब्रह्मा की अलौकिक मार्गदर्शना से

साधारण नारी शक्ति स्वरूपा बन जाती है। परमात्मा शिव नर-नारी दोनो को सहज ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर उनके जीवन को हीरे तुल्य बनाते है।जिससे दोनो का जीवन संवरने से घर संसार स्वर्ग समान बन जाता है। स्वयं के आत्म स्वरूप का ज्ञान होने से स्तीत्व की स्मृति के मान से परे, एक दूसरे के प्रति आत्मिक दृष्टि और व्यवहार होने से अधिकार भावना का दबदबा समाप्त हो-पारस्परिक सम्मान भावना का विकास होता है। आत्मिक स्मृति में रहने से नारी के श्रेष्ठ आत्मिक गुण निखरने लगते है।

परमात्मा से सम्बन्ध जुटने से उसे दिव्य शक्तियाँ प्राप्त होने लगती हैं जिससे भौतिक क्षेत्र में भी कार्यक्षमता और बौद्धिक प्रखरता, ज्ञान और स्मृति से ही आत्मबल बढ़ता है। जिससे बड़ी-2 समस्याएं भी सहजता से पार हो जाती है, और कोई भी साधारण से साधारण नारी भी घर, परिवार, सम्बन्ध आदि की सभी जिम्मेदारियाँ निभाते हुए विश्व उद्धारक, विश्व कल्याणी, विश्व निर्माता बन सकती है। वह परमात्मा पिता के समान ही, सम्पूर्ण विश्व को अपना परिवार समझकर आगे बढ़ती है। ईश्वरीय स्मृति से नारी में विशाल ह्दयता का गुण आ जाता है और उसका जीवन अश्लीलता , फैशन परस्ती, व्यसन, फूहड़ विज्ञापनों, भोड़े मनोरंजन, अनैतिक आचरण के बन्धन से मुक्त होने लगता है ज्ञान औरयोग के पंखों से वह मुक्त गगन का पंक्षी बन ईश्वरीय सेवा का संदेश देने लगती है और साधारण नारी से बदल देवत्व के पथ की राही बन जाती है।

अत: अब वह समय आ गया है कि आत्म ज्ञान से आध्यात्मिक सशक्तिकरण का स्वरूप बनकर संसार को स्वर्ग बनाने की दिशा में महिलायें अग्रसर हों।

डा. सविता, माउन्ट आबू (राज.)

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com